E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

बौद्ध काल में शिक्षा एवं चिकित्सा के प्रमुख केन्द्रों का संक्षिप्त विवरण विवरण

सतीश कुमार

पीजीटी-इतिहास, कर्मचारी आईडी – 079226, माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.12775180

भूमिका :

प्राचीन शिक्षा के केन्द्रों में शिक्षण कार्य भिक्षु करते थे, इनके निर्वाह का प्रबंध विद्यालय की ओर से रहता था। भारत में शिक्षा संस्थाओं का जन्म मठो या बौद्ध विहारों से हुआ है। महात्मा बुद्ध ने उपासकों की विधिवत शिक्षा-दीक्षा पर बहुत जोर दिया था। दस वर्ष तक अध्ययन करने के बाद उपासकों को श्प्रव्रज्याय दी जाती थी। उनके विहार गुरुकुलों के ही समान थे। विहारों का मुख्य आचार्य योग्य भिक्षु होता था। विहारों मठों में भोजन तथा वस्त्र आदि का सुभिता शिष्यों को मिलता था। विद्या समाप्ति पर गुरु दक्षिणा देना आचार माना जाता था। जो गुरुदक्षिणा नहीं चुकाते थे उनको समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता था। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त कुछ प्रसिद्ध शिक्षा एवं चिकित्सा संस्थाओं का वर्णन इस प्रकार है-

तक्षशिला विश्वविद्यालय :

ब्राह्मण और उपनिषद् काल में अर्थात् ईसा पूर्व 600 के पहले तक्षशिला प्राचीन गान्धार राज्य की राजधानी थी। इस प्रकार तक्षशिला भारत और मध्य एशिया के बीच बहुत बड़ा व्यावसायिक तथा व्यापारिक केन्द्र था। [1]

काशी विश्वविद्यालय :

तक्षशिला विश्वविद्यालय के अतिरिक्त एक अन्य विश्वविद्यालय काशी था जहाँ शल्य प्रधान आयुर्वेद का विशिष्ट महत्त्व था। जिसके कुलपति काशीराज दिवोदास धन्वन्तरि थे। यहाँ दूर-दूर के लोग ज्ञान प्राप्त करने के लिए आते थे। इसका उदाहरण इनके अनेक शिष्य है।

नालंदा विश्वविद्यालय :

उस काल का एक अन्य प्रसिद्ध विश्वविद्यालय बिहार प्रदेश में मगध के नालन्दा नामक स्थान में था जो नालन्दा विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता था। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में हमें जानकारी मिलती है कि नालन्दा महाविहार में महात्मा बुद्ध और महावीर स्वामी दोनों वहां ठहरे थे।

विक्रमशिला विश्वविद्यालय :

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

इस विश्वविद्यालय की स्थापना बंगाल के पालवंशीय शासक धर्मपाल ने की थी। यह बौद्ध धर्म के अध्ययन का प्रमुख केन्द्र था। अनेक बौद्ध मंदिरों व विहारों का निर्माण करवाया गया था।

उपर्युक्त विवेचन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि मठ एवं विहारों के प्रारंभ हुई बौद्ध शिक्षा एवं चिकित्सा की पद्धति कालान्तर में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विश्वविद्यालयों तक्षशिला, काशी, नालन्दा, वल्लभइत्यादि में फलीभूत हुई। इसके सुखद परिणाम वर्तमान में भी ना केवल भारतीय समाज व संस्कृति वरन् वैदेशिक क्षेत्रों में भी देखे जा सकते है। [2]

भारत वर्ष में विद्या या चिकित्सा का विक्रय नहीं होता था [3] क्योंकि विद्या एवं चिकित्सा दोनों ही सेवा लाभ समझे जाते थे। किसी भी राष्ट्र अथवा सभ्यता की उन्नति के लिए उसे विद्या आदि से समृद्ध तत्कालीन राष्ट्रों का अध्ययन करना चाहिए। वहाँ की सभ्यता, आदर्श, जीवन, लोक-कल्याणभाव, साहित्य चिकित्सा संबंधी ज्ञान आदि की पूर्ण जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। [4] अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त कुछ प्रसिद्ध शिक्षा एवं चिकित्सा संस्थाओं का वर्णन इस प्रकार है -

तक्षशिला विश्वविद्यालय :

ब्राह्मण और उपनिषद् काल में अर्थात् ईसा पूर्व 600 के पहले तक्षशिला प्राचीन साकार राज्य की राजधानी थी। इस प्रकार तक्षशिला भारत ओर मध्य एशिया के बीच बहुत बड़ा व्यावसायिक तथा व्यापारिक केन्द्र था। इसके फलस्वरूप यह बहुत समृद्ध और ऐश्वर्यशाली नगर बन गया था। [5] अभी तक प्राप्त विवरणों से ज्ञात होता है कि तक्षशिला विश्वविद्यालय सबसे प्राचीन भारतीय विश्वविद्यालय था। तक्षशिला विश्वविद्यालय ने यशस्वी संस्कृत व्याकरण पाणिनी तथा महान राजनीतिज्ञ विष्णुगुप्त कौटिल्य या चाणक्य जैसी प्रतिभाओं को उत्पन्न किया।

तक्षशिला विश्वविद्यालय की स्थापना भरत ने की थी, किन्तु शासन का कार्य तक्ष के हाथों होने से इसका नाम तक्षशिला पड़ा। यहाँ पर भारत के अतिरिक्त बाबुल, ग्रीस, सीरिया देशों से विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते थे। यहाँ पर कुल 68 विभागों के अन्तर्गत शिक्षा के विविध पाठयक्रमों का संचालन होता था। इनमें प्रमुख थे वेद, व्याकरण, भाषा, ज्योतिष, विज्ञान, संगीत शास्त्र, नृत्यशास्त्र, अर्थशास्त्र, तन्त्रशास्त्र, खगोल शास्त्र, धर्म, दर्शनशास्त्र, चिकित्सा विज्ञान, शल्यशास्त्र, राजनीति शास्त्र बुद्धशास्त्र आदि विषय यहां पर आचार्या आत्रेय के अतिरिक्त जीवक, चन्द्रगुप्त मौर्य, कौशल शासक चरक, कौटिलय आदि विद्वानों ने भी शिक्षा प्राप्त की थी। [6]

'विलडूराण्ड नामक विद्यान अपने ग्रंथ 'स्टोरी ऑफ सिविलाइजेशन' [7] में लिखते है कि तक्षशीला काशी, उज्जयिनी एवं विदर्भ आदि नगरों में भारतीय विश्वविद्यालय थे। 'विल डूराण्ड के अनुसार जब अलेकजेण्डर [8] (सिकन्दर) ने तक्षशिला पर आक्रमण किया उस समय वहां एक एशिया का सबसे बड़ा एक सम्मुन्नत विश्वविद्यालय था।

सुश्रुत संहिता में दिवोदास के शिष्य सुश्रुत के सहपाठी के रूप में अनेक देश वाले व्यक्तियों का परिचय मिलता है। सम्भवतः यह प्राचीन गंधार की राजधानी के रूप में ज्ञात पुष्कलावत का रहने वाला हो। [9]

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

विश्वविद्यालय का स्वरूप :

शिक्षा पूर्ण होने पर परीक्षा ली जाती थी। तक्षशिला विश्वविद्यालय से स्नातक होना उस मूल्य अत्यन्त गौरवपूर्ण माना जाता था। यहां धनी व निर्धन दोनों तरह के छात्रों के अध्ययन की व्यवस्था थी। छात्र आचार्य को भोजन, निवास, अध्ययन का शुल्क देते थे तथा निर्धन छात्र अध्ययन करते हुए आशय में कार्य करते थे। शिक्षा पूरी होने पर वे शुल्क देने की प्रतिज्ञा करते थे। प्राचीन साहित्य से विदित होता है कि तक्षशिला विश्वविद्यालय में सुप्रसिद्ध विद्वान, चिंतक, कूटनीतिक, अर्थशास्त्री, चाणक्य ने भी अपनी शिक्षा यहीं से पूर्ण की थी। उसके पश्चात यही शिक्षण कार्य करने लगे। अपने अनेक ग्रन्थों की रचना की। इस विश्वविद्यालय की स्थिति ऐसे स्थान पर थी जहां पूर्व और पश्चिम से आने वाले मार्ग मिलते थे। [10]

चतुर्थ शताब्दी ईसा पूर्व से ही इस मार्ग से भारत वर्ष पर विदेशी आक्रमण होने लगे। अन्ततः छठवीं शताब्दी में यह आश्रम नकरि द्वारा पूरी तरह नष्ट कर दिया गया।

काशी विश्वविद्यालय :

तक्षशिला विश्वविद्यालय के अतिरिक्त एक अन्य विश्वविद्यालय काशी था जहां शल्य प्राप्त आयुर्वेद का विशिष्ट महत्त्व था। इसका उदाहरण इनके अनेक शिष्य है। [11] भारत के प्राचीनतम विद्या केन्द्र और महायान सांस्कृतिक नगरी काशी का एक नाम वरुणा और असी नामक नदियों के बीच में बसने के कारण वाराणसी भी है। वाराणसी को काशी नगर या काशीपुर भी कहा जाता है। [12]

नालंदा विश्वविद्यालय :

उस काल का एक अन्य प्रसिद्ध विश्वविद्यालय बिहार प्रदेश में मगध के नालन्दा नामक स्थान पर था जो नालन्दा विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता था। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में हमें जानकारी मिलती है कि नालन्दा महाविहार में महात्मा बुद्ध और महावीर स्वामी दोनों वहां ठहरे थे। नालन्दा का तात्पर्य है ज्ञान देने वाला। प्राचीन समय में वह राजगीर का उपनगर था तथा यह राजगीर से पटना जाने वाली मुख्य सड़क के मार्ग पर स्थित था। पुराने बौद्ध साक्ष्यों व स्रोतों से पता चलता है कि मौर्य शासक अशोक ने नालन्दा में एक मंदिर बनवाया था। यह शिक्षा का एक सुप्रसिद्ध केन्द्र था जहां पर दार्शनिक नागार्जुन ने अध्ययन किया तथा दूसरी शताब्दी ईस्वी तक यहाँ पर अध्यापन कार्य करवाया। [13] इस विश्वविद्यालय में एक समय में 10,000 विद्यार्थियों तथा लगभग 100 अध्यापकों की व्यवस्था थी। इसके परिसर में 8 अलग-अलग प्रांगण थे। इससे इसकी भव्यता का आभास होता है। विदेशों में यथा-चीन, तिब्बत, श्रीलंका, कोरिया आदि से भी विद्यार्थी यहां पर विद्या अध्ययन करने के लिए आते थे। यहां पर बौद्ध धर्मवेद, वेदान्त, सांख्य धर्मशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, ज्योतिष आदि विषयों की शिक्षा दी जाती थी। इसका प्रमाण खुदाई से प्राप्त भट्टियाँ है। [14] चीनी यात्री हवेनसांग के अनुसार नालन्दा बिहार के अध्ययन के अन्य विषयों में आध्यात्मविद्या (त्रिपिटक भी शामिल थे) हेतु विद्या शब्द विद्या तांत्रिक विद्या आदि भी शामिल थे। इन्होंने नालन्दा विहार के कुछ आचार्यों के नाम भी बताये है, यथा शीलभद्र (प्रधान, आचार्य) धर्मपाल, चन्द्रपाल, गुणमति, स्थिरमति, जिनमित्र और जिनचन्द्र आदि प्रमुख उपाध्याय ये माना जाता था कि सन् 1193 में बख्तियार खिलजी ने आक्रमण कर इस विश्वविद्यालय को ध्वस्त कर दिया था। पुस्तकालय जला दिया गया। आग की लपटें कई दिन तक उठती रही, सब कुछ समाप्त हो गया। [15] इस प्रकार 12$^{वीं}$ शताब्दी तक यह शिक्षा व चिकित्सा का प्रसिद्ध केन्द्र रहा। नालंदा विश्वविद्यालय प्रतिष्ठा को पुनर्स्थापित करने के प्रयास अभी भी जारी है जो उसकी महत्ता को वर्तमान में प्रदर्शित करता है।

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

निष्कर्ष :

प्राचीन समय में ही निमि के संरक्षण में विदेह नगरी में शालाक्य प्रधान स्कूल था। दक्षिणी भारत में भी विषविद्या एवं रस शास्त्र का ज्ञान विकसित हुआ। उपर्युक्त विवेचन से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि मत एवं विहारों से प्रारंभ हुई बौद्ध शिक्षा एवं चिकित्सा की पद्धति कालान्तर में अन्तरर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विश्वविद्यालयों तक्षशिला, काशी, नालन्दा, वल्लभी इत्यादि में फलीभूत हुई। इसके सुखद परिणाम वर्तमान में भी ना केवल भारतीय समाज व संस्कृति वरन वैदेशिक क्षेत्रों में भी देखे जा सकते है।

संदर्भग्रंथ सूची :

1. आयुर्वेद का वृहत् इतिहास, अत्रिदेव विद्यालंकार, पृ. 518.
2. मिलिन्दपन्हो
3. चरक संहिता, चिकित्सा स्थान, 1/4/55-59.
4. आयुर्वेद का एक प्रामाणिक इतिहास, डॉ. भगवत राम गुप्ता, पृष्ठ 471.
5. ऊपर, पृ. 472.
6. आयुर्वेद का इतिहास, प्रो. रामहर्ष सिंह, पृ. 373
7. विल डूराण्ड, स्टोरी ऑफ सिविलाइजेशन
8. आयुर्वेद का इतिहास एवं परिचय, डॉ. विद्याधर शुक्ल एवं डॉ. रविदत्त त्रिपाठी, पृ. 157.
9. सुश्रुत संहिता
10. अलतेकर, प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति, पृ० 84-86.
11. जातक-V, 54, 115, धम्मपद कमेन्ट्री, 1.87.
12. जातक-IV, 377, 160 तुलनीय मज्झिम कमेंट्री द्वितीय, 606.
13. धम्मपद III, पृ० 429, प्रथम पृ० 123.
14. दीघ निकाय III, 146.
15. बील बुद्धिस्ट रिकाड्स ऑफ दि वेस्टन वर्ल्ड, 1.44